नैषधं विद्वदौषधम्

निषधः देशविशेषः, निषधानां राजा नैषधः तस्य इदं चरितम् - नैषधीय चरितम्।

संस्कृत महाकाव्यों में बृहत्त्रयी अत्यन्त प्रसिद्ध है इसमें भारविकृत 'किराता र्जुनीयम्' माघकृत शिशुपालवधम् और श्रीहर्षकृत 'नैषधीय चरितम्' को स्थान प्राप्त है। वस्तुतः लोकोत्तर चमत्कार, समास, ध्वनि अलंकार पदलालित्य, वर्णन रीति, वक्रोक्ति, प्रमाण इत्यादि के असाधारण प्रयोग के कारण 'नैषधचरितम्' महाकाव्यों में श्रेष्ठ है। अतस्व इस महाकाव्य के विषय में यह आभाणक प्रसिद्ध है -

तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः॥

श्रीमान बलदेव उपाध्याय ने नैषधचरित की गणना अपकर्षकाल के काव्यों में की है। अपकर्षकाल का काव्य कहने पर भी इस काव्य की श्रेष्ठता को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता है। दुर्बोधिता के कारण ही इस महाकाव्य को अपकर्षकाल का काव्य कहा जाने लगा। इस दुर्बोधता का कारण भी है, कि श्रीहर्ष का जन्म उस समय हुआ था, जब कविता के मानक बहुत ऊँचे हो चले थे। इसलिए ही उन्होंने

Scanned with CamScanner

'सदसद् संशय गोचरोदरी'

लोकेषु केशवशिवावपि यश्चकार शृंगारशान्तरभशान्तरशान्तभा
पञ्चेन्द्रियाणि जगतामिषुपञ्चकेन संक्षोभयन् वितनुतां वितनुर्मदं वः॥

ऐसे प्रयोग करने पड़े। श्रीहर्ष ने अपने विद्वत्प्रदर्शन का जो उपक्रम काव्य में किया है, उससे काव्य में क्लिष्टता और दुरूहता आ गई है। अनेक शास्त्रीय सिद्धान्तों के वर्णनों, क्लिष्ट तथा श्लिष्ट प्रयोगों के चित्रणों और बहुलता सम्बन्धी स्वपाण्डित्य प्रदर्शन से उन्होंने अपने काव्यगागर में सागर भर दिया है।

इस काव्य में श्लेषयुक्त प्रयोगों के अतिरिक्त व्याकरण न्याय वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा चार्वाकादि दर्शनों के कठिन सिद्धान्तों का भी यत्र तत्र वर्णन किया है। अतः जिनको इन सभी शास्त्रों का ज्ञान नहीं है, उनके लिए इसे समझना अत्यन्त दुरूह है। इसी कारण पाश्चात्यविद्वानों ने भी हर्ष की कटु आलोचना की है कि इन्होंने कलापक्ष को इतनी महत्व दिया है, जिसमें भावपक्ष कहीं दबकर रह गया है। अतः इनके काव्य में विद्वत्बुद्धि को बहुत व्यायाम करने के कारण 'नैषध विद्वदौषधम्' कहा है।

रीति→ इन्होंने वैदर्भी और गौडी दोनों रीतियों का प्रयोग सिद्धहस्तता से किया है गौडी लक्षण→

'ओजः प्रकाशकैर्वर्णैर्बन्ध आडम्बरः पुनः। समास बहुला गौडी।'

जैसे उदा०→ 'सुवर्णदण्डैकसितातपत्रितज्वलत्प्रतापावलिकीर्ति-मण्डलः।'

पुनरपि श्री हर्ष की शैली वैदर्भी विशेष है यह कालिदास की तरह प्रसादगुणयुक्त नहीं है यह प्रायः पाण्डित्यपूर्ण है, उन्होंने वैदर्भी के सम्बन्ध में स्वयं कहा है –

"धन्यासि वैदर्भिगुणैरुदारैर्यया समाकृष्यत नैषधोऽपि इतः स्तुतिः का खलु चन्द्रिकायाः यदब्धिमप्युत्तरली करोति॥

वैदर्भी लक्षण→

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते॥

उदा०→ 'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी'

श्लेष→ श्री हर्ष ने प्रायः सभी अलंकारों का प्रयोग किया है फिर भी संस्कृत भाषा, व्याकरण व शब्दकोष पर पूर्णाधिकार होने के कारण इनका श्लेष विशिष्ट हो जाता है जैसे–

Scanned with CamScanner